॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! हे मेरे जीवन के संचालक! तू आकर हमें तपस्वी बना। हमें योगी बना। प्रभु! अब मुझे किसी ने संकेत कराया है कि तू तपस्वी बन। हे प्रभु! मेरे जीवन में, मेरे हृदय में जो नाना प्रकार की त्रुटियाँ हैं, उन त्रुटियों को मुझ से दूर करो, मैं त्रुटिदायक नहीं बनना चाहता। प्रभु! मेरा जीवन आपकी कृति में हो, मेरा जो जीवन है, मेरी जो संकलन धारा है, वह आपकी कृति में होनी चाहिए।

सुन्दर यज्ञ करने को देव पूजा कहा जाता है, जिसमें देवताओं का आदर होता है, देवताओं के लिए हवि प्रदान करते हैं। यजमान की अवस्था सौ वर्षों की होनी चाहिए। हे परमात्मन्! आप अधिक से अधिक अवस्था दीजिए, जिससे विधाता! हमारा जीवन सँसार में पवित्र बनता जाए और हम अपनी मानसिक इन्द्रियों को सुन्दर करते चले जाएँ। हम परमात्मा की कृति को हम उस परमात्मा को प्रातः और साँयकाल धन्यवाद करते चले जाएँ, जिससे हृदय में मानसिक बल आता चला जाए और **जिस मानव के हृदय में मानसिक बल होता है वह किसी भी काल में रुग्ण नहीं होता, उसको किसी प्रकार का भी दुःखद नहीं होता।** वह सदैव एक रस बना रहता है। निर्द्वन्द बना रहता है, ब्रह्मचर्यता को ले करके चलता है, अग्नि को ले करके चलता है, प्रकाश को ले करके चलता है और उस प्रकाश में वह प्राणी रहता है, जिसके पश्चात् अन्धकार नष्ट होता चला जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 562 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 637
वर्ष : 47 44 समग्र वर्ष : 54

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. वसुन्धरा का दिग्दर्शन	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-21
4. गौमेध याग की विवेचना (गौ-सूक्त)	पूज्यपाद-गुरुदेव	22-37
5. ऋषियों के उद्‌गार		38
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

श्रावणी पर्व

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से रक्षाबन्धन के शुभावसर पर दिनाँक 15-8-2019, दिन वृहस्पतिवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा के प्राङ्गण में सामवेद ब्रह्म-पारायण महायज्ञ का आयोजन श्री गाँधी धाम समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

वसुन्धरा का दिग्दर्शन

ओ३म् भविता रथम् ग्राहणत्वा यम रथाः गायाः माम् भद्रा यशश्चाऽम् वशोमाऽम् दिव्याः।

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और वे अनन्तमयी अमृतम् भूयश्चतम् वह हमारा पुरोहित है और हमें पराविद्या को प्रदान करने वाला है और हमें ऊर्ध्वा में प्रेरणा देता रहता है। इस प्रेरणा के फलस्वरूप हम मानो अपने को उस प्रेरणा को प्राप्त करते हुए अपने को महान् बनाने के लिए मानो सदैव तत्पर रहते हैं और विचारते रहते हैं कि उस परमपिता परमात्मा जो पुरोहित है, जो पराविद्या को प्रदान करने वाला है हम उस परमपिता परमात्मा की उपासना करते रहें क्योंकि वह हमारा उपास्य देव है और उस देव की महिमा को जानना हमारा कर्त्तव्य है। क्योंकि उसकी महिमा को जानना, उसकी प्रतिभा को जानना है और जितनी उसकी महिमा में महिमावादी बन करके, मानो उसके आन्तरिक जगत में चले जाओगे तो उतनी तुम्हारी महानता बलवती होती रहेगी। और परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान है अथवा विज्ञान है उस ज्ञान और विज्ञान को तुम अपने में धारण करते हुए इस संसार सागर से पार हो जाओ।

वेद मन्त्र की आभा और प्रतिभा

आओ, मेरे पुत्रों! हमारा वेद का मन्त्रः, वेद का एक-एक मन्त्र हमें उस आभा में ले जा रहा है जहाँ हमारा जीवन और परमपिता परमात्मा की महिमा से मानो वो कटिबद्ध होता रहा है। आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं इस सन्दर्भ में तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। केवल हमारा वेद मन्त्र क्या कहता है, उस वेद मन्त्र की आभा और उसकी प्रतिभा में तुम्हें ले जाने के लिए सदैव हम तत्पर रहते हैं। तो आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा जो वसुन्धरा के रूप में परणित रहता है। एक-एक वेद मन्त्र बेटा! उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्रः माता की गाथा गा रहा है इसी प्रकार जैसे यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। इसी प्रकार, एक-एक वेद का मन्त्र मुनिवरों! देखो उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है। उसकी सृष्टि का बखान कर रहा है। उसके ब्रह्माण्ड की प्रतिभा में वो सदैव रत्त रहने वाला है। तो आओ मुनिवरों! देखो वेद का मन्त्र हमें यह कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा को वसुन्धरा स्वीकार करते हुए और उसे हम अपने में अपने को और अपने में मानवृत्ति मानो देखो एक-दूसरे में रत्त हो जाएँ यदि हम अपने जीवन को महान् और पवित्र बनाना चाहते हैं।

आओ, मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय केवल यह कि आज का हमारा वेद मन्त्र यह कह रहा है कि मानो देखो **एक-दूसरे का यह संसार पूरक कहलाया गया है।** एक-दूसरे का ये निर्णय देता रहता है। एक-दूसरे की प्रतिभा में यह निहित रहता है। जैसे बेटा! देखो, माता का पुत्रः माता की गाथा गा रहा है। मानो **पुत्र से माता का ज्ञान हो जाता है।** इसी प्रकार **यह जो पृथ्वी है इससे ब्रह्माण्ड का ज्ञान होता है।** जब भी मानो बेटा! विज्ञानवेत्ता, अपने में वैज्ञानिक बनने के

लिए तत्पर हुआ है तो उसने पृथ्वी के परमाणु अथवा पृथ्वी के गुरुत्व भाग को ले करके उन्होंने अन्वेषण करना प्रारम्भ किया। तो वो ज्ञान और विज्ञान की ऊर्ध्वा उड़ान में परणित होने लगा। मेरे प्यारे! क्योंकि उसका ज्ञान और विज्ञान इतना नितान्त और भव्यता में परणित रहा है, क्या मानव अपने में अनुसन्धान करता रहा, परन्तु उसके पश्चात् उसकी प्रतिभा अपने में महानता का बखान करती रही है।

वसुन्धरा के स्वरूप

आओ, मेरे पुत्रों! देखो, आज मैं तुम्हें उन्हीं ऋषि-मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि-मुनि एक-एक वाक्य के ऊपर बेटा! अपना अन्वेषण करते रहे हैं अथवा विचार-विनिमय करते रहे हैं। एक समय बेटा! हमें स्मरण आ रहा है, मुनिवरों! देखो नाना ऋषिवर और महर्षि वैशम्पायन ने गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से यह कहा था कि महाराज अमृतामवसुन्धरम् ब्रह्मा प्रवम् हे प्रभु! यह वसुन्धरा कौन है, यह वसुन्धरा क्या है? तो ऋषि ने कहा ''अमृतामवसुन्धरम् ब्रह्मे समम् ब्रव्हा प्रवम'' उन्होंने कहा कि जिसमें वो मानो, ये मानव समाज का प्राणी मात्र जिसमें वशीभूत हो रहा है अथवा उसमें बस रहा है, वही वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है। इसीलिए वह वसुन्धरा कहलाती है। तो मेरे प्यारे! देखो वह परमपिता परमात्मा वसुन्धरा के रूप में विद्यमान है और वसुन्धरा पृथ्वी के रूप में विद्यमान रहती है। क्योंकि वैदिक साहित्य में नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की विवेचना होती रही है और वह जो विवेचना, वह महानता में सदैव परणित रही है। मेरे प्यारे! देखो इसी प्रकार वसुन्धरम् यागाम् भूः वर्णस्सुतम् ब्रह्माः हमारे यहाँ वेद की एक-एक आख्यायिका बेटा! बड़ी ऊर्ध्वा में हमें उड़ान उड़ाने के लिए बाध्य करती रहती है और विचार देती रहती है कि हम अपने में, मानो अपने को अप्रतम्, एक-दूसरे का पूरक स्वीकार करते हुए उसकी महिमा का गुणगान गाना चाहिए और उसकी महिमा में हमें रत्त हो जाना

चाहिए। तो मेरे पुत्रों! देखो इसीलिए वह अमृताम् ये जो पृथ्वी है यह वसुन्धरा कहलाती है। मेरे प्यारे! इसके गर्भस्थल में नाना प्रकार को जो खाद्यान्न और खनिज तपायमान हो रहा है उसे वैज्ञानिकजन अपने में धारण करते रहे हैं।

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ, बेटा! एक समय एक यन्त्र का निर्माण हुआ था जिस यन्त्र का नाम **अहिल्या कृतिभा वर्णस्सुतम्** यन्त्र कहते थे। मेरे प्यारे! देखो अहिल्या कहते हैं पृथ्वी को, और पृथ्वी के गर्भ में कौन-सा खनिज कहाँ पर विद्यमान है, कितनी दूरी पर है और उसका कौन मानो देखो, देवता माना गया है यह सर्वत्र उस यन्त्र में मुनिवरों! देखो दृष्टिपात आता रहता था। तो हमारे यहाँ वसुन्धरम् ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो यह पृथ्वी वसुन्धरा इसीलिए कहलाती है, क्या इसके गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज नाना रूपों में मुनिवरों! देखो गमन करता रहता है और वह अपने में गतिवान् होता रहा है। तो उसको जानने के लिए मानव सदैव अपने में धारयामी बना हुआ है। परन्तु देखो वैज्ञानिकजनों ने बेटा! जब भी विज्ञान का आश्रय लिया है अथवा विज्ञान के गर्भ में जाने का प्रयास किया तो उन्होंने पृथ्वी के गुरुत्व पदार्थ परमाणुओं को जानने के लिए सदैव तत्पर रहे। मेरे प्यारे! देखो यह जो गुरुत्व है, यही तो प्रारम्भ में मुनिवरों! मानवीय मस्तिष्कों में एक वसु के रूप में परणित रहता है जिसको जानने के पश्चात् मुनिवरों! ये अपने में अपनेपन को धारण करता हुआ अपनी प्रतिभा में मुनिवरों! देखो मानव समाज को ले जाता है और विज्ञानवेत्ता बना देता है। मुझे स्मरण आता रहता है जब वैज्ञानिकजन, जैसे महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! विज्ञानवेत्ता इस पृथ्वी के ऊपर अन्वेषण करने लगे। गुरुत्व परमाणु को ले करके बेटा! उन्होंने तरल परमाणुओं से जब मिलान किया तो मेरे पुत्रों! देखो यह पृथ्वी ही एक गुरुत्व रूप में परणित होने लगी।

प्रथम अन्वेषण

मेरे पुत्रों! एक समय शिकामकेतु उद्दालक और मुनिवरों! ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि, मेरे प्यारे! देखो यज्ञदत्ताः ये सब देखो एक समय एक स्थली पर विद्यमान थे। तो शिकामकेतु उद्दालक मुनि से ये प्रश्न किया गया कि महाराज, हम यह जानना चाहते हैं क्या यह जो प्रथम ब्रह्माः ये पृथ्वी प्रारम्भ में ही क्यों इसके ऊपर अन्वेषण होता रहा है? तो महर्षि ने कहा क्या यह इसलिए अमृताम् मानो देखो यह अमृत है। यही तो अमृत कहलाता है। इसमें गुरुत्व है और ये पृथ्वी के अनृत्व रूपों में रत्त रहने वाला, क्योंकि इसी के गुरुत्व में ही सर्वत्र परमाणु विद्यमान होते हैं, एक-दूसरे से गुथे हुए रहते हैं। तो इन परमाणुओं को जानने से ही मानव नाना प्रकार के याग में परणित होता रहा है और नाना प्रकार के विज्ञान में रत्त होता रहा है। तो इसलिए विज्ञानवेत्ता अपने में विज्ञानशाला का जब भी निर्माण करते रहे हैं, और यज्ञशालम् ब्रह्माः इस गुरुत्व पदार्थ को जान करके बेटा! उन्होंने नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया और उन यन्त्रों में यन्त्रित हो करके मेरे प्यारे! और भी नाना प्रकार की मालाएँ बन जाती हैं। मैंने मालाओं के सम्बन्ध में तुम्हें कई काल में प्रगट करते हुए कहा, क्या ये मानो देखो एक-दूसरे में माला पिरोई जाती है।

मुनिवरों! ये जो पृथ्वी है जब इसको जानने के लिए मानव ने प्रयास किया और शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ विज्ञानवेत्ताओं ने मेरे पुत्रों! देखो याग के माध्यम से उन्होंने पृथ्वियों को जानने का प्रयास किया। एक पृथ्वी नहीं, दो नहीं मेरे पुत्रों! देखो उन्होंने तीस लाख पृथ्वियों को साक्षात्कार किया। और वह तीस लाख पृथ्वियों की बेटा! एक माला बन गयी। और माला को धारण करने वाला, मेरे पुत्रों! देखो यह सूर्य कहलाता है। यह सूर्य इतना विशाल मण्डल है क्या मुनिवरों! देखो इसमें तेरह लाख पृथ्वियाँ समाहित हो जाएँ। इतना विशाल मेरे

पुत्रों! देखो ये सूर्यमण्डल कहलाता है, ये अपने में विज्ञान में रत्त होता रहा है। जब भी विज्ञानवेत्ता बेटा! अपने में अन्वेषण करने लगे हैं, तो उन्होंने मुनिवरों! देखो सूर्य की ऊर्ज्या को जानने का प्रयास किया है और इसी ऊर्ज्या को ले करके मुनिवरों! देखो उन्होंने अमृताम् देवत्म ब्रह्माः यन्त्रों का निर्माण किया। और सूर्य की किरणों के साथ मुनिवरों! देखो यन्त्र गमन करने लगा।

माला का दर्शन

आओ मेरे पुत्रों! मैं विज्ञान के क्षेत्रों में तुम्हें विशेषकर नहीं ले जाना चाहता हूँ। आज बेटा! मैं तुम्हें परिचय कराने के लिए आया हूँ, जिन वाक्यों की मैं पुनरुक्तियाँ भी करता रहता हूँ, विचार भी आते रहते हैं, प्रकरण आता रहता है। इसी प्रकरण के आधार पर विचारों की ध्वनियाँ उत्पन्न होने लगती हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो वही विचार आज मुझे पुनः से स्मण आ रहा है और वह विचार क्या, मुनिवरों! देखो, जब ये माला बनी तो तीस लाख पृथ्वियों की माला बनी। जिस माला को धारण करने वाला बेटा! यह सूर्य कहलाता है। मानो देखो, जब ऋषि-मुनियों ने, बेटा! वैज्ञानिकों ने उसके ऊपर अन्वेषण प्रारम्भ किया, तो बेटा! जानने लगे। **कहीं वेद मन्त्र का आश्रय ले रहे हैं, कहीं प्राण और देखो मन का आश्रय ले रहे हैं, कहीं विचारों का आश्रय ले करके मुनिवरों! देखो, उन्होंने सूर्यों की गणना प्रारम्भ की।** ये जो ब्रह्माण्ड है यह तो अनन्तमयी माना गया है। परन्तु जब सूर्यों की गणना करने लगे, बेटा! ऋषि-मुनि शिकामकेतु उद्दालक गोत्र में बेटा! इसका निर्णय होता रहा। जब विचार-विनिमय करते रहे तो मेरे पुत्रों! देखो उन्होंने एक सहस्त्र सूर्यों को जान लिया। एक सहस्त्र सूर्यों को अपनी विज्ञानशाला में, प्रयोगशाला में और अपने मानो देखो **हृदयरूपी यज्ञशाला में जानने का प्रयास किया।** मेरे पुत्रों! लगभग एक सहस्त्र सूर्यों को जाना। बेटा! सूर्यों की माला बन गयी। एक सूर्यों की जब

माला बन गयी, बेटा! उसका सुमेरू ब्रह्म बन गया, मेरे पुत्रों! प्राण सूत्र में पिरोया गया। मेरे पुत्रों! जब वे प्राण सूत्र में पिरो करके जब माला बन गयी, तो उस माला को, मेरे पुत्रों! देखो, बृहस्पति ने अपने में धारण कर लिया। बृहस्पति इतना विशाल मण्डल है क्या बृहस्पति में बेटा! देखो, इसमें एक सहस्त्र सूर्य समाहित हो जाए, ऐसा विशाल मेरे पुत्रों! देखो यह बृहस्पति मण्डल कहलाता है। यह बृहस्पति देखो अपने में धारण कर रहा है, यह वसुन्धरा के रूप में माना गया है। मानो इसमें मण्डल, इसमें धारयामि बने हुए हैं और यह उनको पिरो रहा है। और ब्रह्म सूत्र में पिरो करके बेटा! इनकी माला बना करके अपने में धारण कर रहा है।

मेरे पुत्रों! देखो जब वह धारण करने लगता है, ''ब्रह्मणम् ब्रव्हा क्रतम्'' वेद की आख्यायिका कहती है, यही बृहस्पति है जो मानो देखो नाना सूर्यों को अपनी आभा प्रदान कर रहा है। क्रतम् ब्रव्हा, वह कृतियों में रत्त कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि-मुनि यहाँ शान्त नहीं रह सके। उन्होंने बेटा! एक सहस्त्र बृहस्पतियों को जानने का प्रयास किया अथवा उन्होंने जाना और बृहस्पतियों को जान करके बेटा!, एक-दूसरे नक्षत्रों में उसकी प्रतिभा अथवा उसकी कृतिका, उसकी आभा मुनिवरों! देखो उन्हें आभायित कर रही है। उसी को प्रभावित करते हुए, मेरे पुत्रों! एक विशाल माला के रूप में, वे मालेश्वर बन करके, उसे धारण करने वाला एक सहस्त्र बृहस्पतियों को धारण करने वाला, आरुणी मण्डल को उन्होंने जान लिया। मुनिवरों! देखो, आरुणी मण्डल इतना विशाल है, जिसमें बेटा! एक सहस्त्र मानो बृहस्पति उसमें समाहित हो जाए। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि-मुनि समाधिष्थ हो करके मानो विद्यमान हो गए। एक-एक परमाणु का जब विभाजन करने लगे तो एक-एक परमाणु में बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड का चित्र उन्हें दृष्टिपात आने लगा। और जानापि इषम् ब्रव्हा शान्ति न हो सकी। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने देखो आरुणी मण्डल को जानने के पश्चात् उन्होंने विचार-विनिमय

किया। वेद मन्त्र के ऊपर अन्वेषण होने लगा, तो मेरे प्यारे! देखो इतने में उन्होंने ध्रुव मण्डल को जानने का प्रयास किया और ध्रुव मण्डल इतना विशाल मण्डल है, इसमें बेटा! देखो, एक सहस्त्र आरुणी उसमें समाहित हो जाए। मेरे पुत्रों! प्रभु का ब्रह्माण्ड कितना अनन्तमयी है। आज जब प्रभु के ऊपर विचार करते हैं तो वह माता कैसी वसुन्धरा है जो हम सबको अपने में धारण कर रही है। ''हे ममत्वाम् धारणामम् ब्रह्मे'', हे माता! तू हमें धारण कर रही है। **वह हमारा पितर हमारी माता के स्वरूप में विद्यमान रहता है।** मेरे प्यारे! देखो ऋषि-मुनियों का तो एक ही कर्त्तव्य बना रहा है कि वह अपने में अन्वेषण करते रहे, अनुसन्धान करते रहे, अपनी प्रतिभा में वो रत्त रहे। मेरे प्यारे! देखो इतने में शान्ति नहीं स्थापित हुई। वह अन्वेषण करते रहे, विचार करते रहे।

मेरे पुत्रों! देखो एक सहस्त्राणी ब्रह्मे बेटा! ध्रुवम् ब्रहा, ऐसी वेद की आख्यायिका उन्हें स्मरण आयी। मेरे पुत्रों! देखो, ये जितना ध्रुव मण्डल है, एक सहस्त्र ध्रुवों को जानने का प्रयास किया और जान करके यह दृष्टिपात किया, इसकी माला क्या है। यह माला ब्रह्म सूत्र में पिरोयी गयी। एक सहस्त्र ध्रुव मण्डलों की माला बन करके, मेरे पुत्रों! देखो उसको पुष्प नक्षत्र अपने में धारण कर गया। मेरे प्यारे! देखो, एक सहस्त्र पुष्प नक्षत्रों को जानने वाला बेटा! ऋषि मानो देखो, वह एक सहस्त्र पुष्प नक्षत्रों की माला बनी जिसको बेटा! देखो स्वाति ने अपने में धारण कर लिया। और स्वाति मण्डल, बेटा! नाना प्रकार के देखो, मण्डलों में एक विशिष्ट कहलाया गया है। उसका समन्वय वशिष्ठ मण्डल से रहता है और वशिष्ठ मण्डल का समन्वय अरुणधति से रहता है, और अरुणधति का समन्वय बेटा! व्रति लोकों से रहता है और मूल नक्षत्र के वृत्तियों में रत्त रहने वाला है। मेरे प्यारे! देखो ऋषि को यहाँ भी शान्ति स्थापित नहीं हुई। उसके पश्चात् वह जानने लगा कि एक सहस्त्र स्वाति और मानो देखो पुष्प नक्षत्र एक-दूसरे में पिरोये गए तो मानो देखो अमृतम् एक

सहस्त्र बेटा! उन्होंने देखो स्वाति नक्षत्रों को जाना तो बेटा! वो पुष्प नक्षत्र में और पुष्प नक्षत्र एक सहस्त्र बेटा! देखो अचल मण्डल में प्रवेश कर गए। वह अचल मण्डल इतना विशाल, बेटा! जिसमें नाना एक सहस्त्र मण्डलों की माला बना करके अपने में धारण कर रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तेरा ये कैसा विशाल मण्डल है, कैसी विचित्र धाराएँ हैं। मेरे पुत्रों! यहाँ भी शान्ति स्थापित नहीं हुई। उन्होंने बेटा! एक सहस्त्र अचल मण्डलों को वासु मण्डल में प्रवेश कर दिया। वासु मण्डल बेटा! एक सहस्त्र अचल मण्डलों को अपने में धारण कर रहा है। और एक सहस्त्र बेटा! देखो वासु मण्डल यन्त्र, बेटा! जो गन्धर्व लोकों में प्रवेश हो रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो येषो इषम् ब्रहा, मेरे प्यारे! गन्धर्व से ले करके और पृथ्वी मण्डल तक, इतने मण्डलों का मुनिवरों! देखो एक सौर मण्डल बन जाता है। ये बेटा! एक सौर मण्डल बना है। इस सौर मण्डल के लिए मैं सदैव यह विचारता रहता हूँ, ऋषि-मुनियों के विचारों को ले करके, क्या उनका इसके ऊपर कितना गहन अध्ययन है। उन्होंने ये कहा है कि मन, प्राण और देखो विचार में जब प्रवेश कर जाता है मानव, तो मेरे पुत्रों! देखो वह गन्धर्व लोक से ले करके और पृथ्वी तक अपने में बेटा! इस ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करता है, उनका एक सौर मण्डल बन गया। बेटा! एक सौर मण्डलम् ब्रह्माः, मेरे प्यारे! ऐसे-ऐसे सौर मण्डल लगभग देखो एक अरब पञ्चानवें करोड़ नवासी लाख उनचानवें हजार पाँच सौ इकसठ, देखो ऐसे-ऐसे, मेरे प्यारे! सौर मण्डलों का एक आकाश गङ्गा का निर्माण हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो वह निर्माणशाला में मानव जब प्रवेश करता है, परमात्मा के इस ब्रह्माण्ड को अपने में दृष्टिपात करता है, तो बेटा! मानव तरङ्गित हो जाता है और तरङ्गों में तरङ्गित हो करके ही मुनिवरों! ऊर्ध्वा में गमन करने लगता है।

विचार आता रहता है, वह मेरी प्यारी माँ कैसी वसुन्धरा है बेटा! जिसमें नाना प्रकार के सौर मण्डल वशीभूत हो रहे हैं, बस रहे हैं। आकाश गङ्गाएँ बस रही हैं। आगे वेद का ऋषि बेटा! समाधिस्थ हो

करके विद्यमान हो गया। अणु और परमाणु के ऊपर, प्रकृति के ऊपर अन्वेषण करने लगा। चरि को विचारने लगा बेटा!, ब्रह्म की पुट लगाता हुआ। उसने विचारा, क्या यहाँ तो, इससे आगे तो और जगत है। तो उन्होंने बेटा! देखो ये निर्णय लिया क्या एक अरब नवासी करोड़ उनचानवें लाख उनचास हजार पाँच सौ इकसठ के लगभग बेटा! ऐसी-ऐसी आकाशगङ्गाओं की एक निहारिका बन जाती है। मेरे प्यारे! वो निहारिका कहलाती है। और मुनिवरों! पौने दो अरब निहारिकाओं की एक अवन्तिका बन जाती है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मौन हो जाता है। और ऋषि कहता है कि ये जो प्यारी माता वसुन्धरा है, इसके गर्भ में मानो देखो हम सब वशीभूत रहते हैं। अरे! उसमें तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड ही वशीभूत रहता है। बेटा! ऋषि नेति-नेति कह करके अन्त में शान्त हो गया। और ये कहा कि ये तो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है, अनन्तमयी जगत है। जिसके ऊपर मुनिवरों! देखो ऋषि-मुनि अपने में अन्वेषण और अनुसन्धान करते रहे हैं।

ब्रह्म सूत्र

मेरे पुत्रों! देखो विचार आता रहता है। मैं यह उच्चारण कर रहा था कि ये पृथ्वी वसुन्धरा कहलाती है। बेटा! जब ये विज्ञानवेत्ता पनपे हैं और विज्ञानवेत्ताओं ने ही इस संसार को मापने का प्रयास किया है तो सबसे प्रथम उन्होंने गुरुत्व, पृथ्वी के गुरुत्व परमाणुओं को जानने का उन्होंने अभ्यस्थ किया। और उन्होंने उसको जानने के लिए सदैव तत्पर रहे। उसको जाना और क्रियात्मकता में ला करके, उन्होंने, ब्रह्माण्ड को क्रियात्मकता में मापने का प्रयास किया। तो मेरे पुत्रों! विचार आता रहता है, क्या वह मेरी प्यारी माँ जो संसार को अपने में धारण कर रही है वो माता वसुन्धरा कितनी विचित्र है। हे परमात्मन्! जब तेरी महिमा का हम गान गाने लगते हैं तो हमें ये संसार, मानो देखो, तीन गुणों वाला जो संसार है, यह न होने के तुल्य हमें दृष्टिपात आता रहता है।

मानो उस समय आप हे ब्रह्मन्! आप ही मानो देखो ब्रह्मरूप स्वीकार करके हमारे हृदयों में ऊर्ध्वा में प्रेरणा, प्रेरणा को देते हुए व मङ्गलम् ब्रहे आप प्रेरणा के स्त्रोत बन जाते हैं। आओ मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। मैं आज तुम्हें कोई विशेषता में केवल ये क्या सूक्ष्म वार्त्ताओं का एक मैं तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है, क्या वह मेरी प्यारी माँ वसुन्धरा है, पृथ्वी वसुन्धरा है। परमपिता परमात्मा वसुन्धरा है जिसके गर्भ में बेटा! ये सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है और वह ब्रह्म सूत्र कहलाता है जैसे पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खाद्यान्न और खजिन पदार्थ तप रहा है। मेरे प्यारे! देखो इसी में से वैज्ञानिक नाना प्रकार की धाराओं को ले करके और वह ध्वनियों को ले करके मुनिवरों! यन्त्रों का निर्माण करते रहे हैं। तो आओ मेरे प्यारे! देखो एक-एक शब्द पर विज्ञानवेत्ता अपने में वैज्ञानिक तथ्यों को जानते रहे हैं। और वैज्ञानिकता में रमण करते हुए अपने में अपनेपन को ही अपने में धारण करते हुए धारयामि कहलाते हैं। तो आओ मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाना चाहता हूँ। विचार केवल ये कि मुनिवरों! देखो ये वसुन्धरम् ब्रह्माः, हे वसुन्धरे! मेरे प्यारे! देखो ये ब्रह्माण्डम् ब्रह्माः, जब ब्रह्मचारी बेटा! अपने में इसे वसुन्धरा के रूप में परणित कर लेता है तो वह ब्रह्मवेत्ता बन करके ब्रह्म और चरि को जानने लगता है। ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरि कहते हैं प्रकृति को। जो अङ्ग और उपाङ्गों से जानने वाला है, बेटा! वही तो अपने को देखो सूत्रित बन करके, और वह अपने एक-एक श्वास के मनके बना करके, बेटा! ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है और वसुन्धरा को जानने लगता है।

ब्रह्म का स्वरूप

आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा नहीं प्रगट करने आया हूँ, केवल परिचय देता रहता हूँ। मुनिवरों! देखो परिचय देना हमारा कर्त्तव्य

है। क्योंकि यज्ञो ब्रह्माः कृतम् वेद का एक-एक मन्त्र बेटा! हमें बहुत ऊर्ध्वा में गमन कराता है। वेद मन्त्र कहता है उदगम् ब्रहे वर्णम् ब्रहा वृतम् देवत्वम् ब्रह्माः वर्णोस्वसुताः! मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र कहता है, हे परमात्मन! तुम जैसे परा विद्या को धारण करने वाले हो, मानो ऐसे ही तुम वरुण कहलाते हो, देवता कहलाते हो, मानो देखो आप ही हमारे पुरोहितम् ब्रह्माः, बेटा! देखो ब्रह्मण हो। जब ब्रह्मणम् ब्रह्माः, 'देखो वह एक-एक कण में जो व्याप रहा है' उसी का नाम, बेटा! देखो ब्रह्मण कहलाया जाता है। वह ब्रह्म कहलाया जाता है, इसीलिए हमें ब्रह्म को जानना चाहिए।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज द्वारा याग की विवेचना

आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ। आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, इस वायुमण्डल को बेटा! हमें जानने के लिए विचार-विनिमय करना चाहिए। जैसा मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ ब्रह्मचारियों को प्रातःकालीन बेटा! देखो वह याग करने के पश्चात् कुछ उपदेश मञ्जरी उनकी प्रारम्भ होती। और उपदेश होना जब प्रारम्भ होता तो मुनिवरों! देखो याग, **प्रातःकालीन विद्यालयों में याग का होना, ये बेटा! देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की बड़ी वित्रित देन थी उस काल में।** तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं और महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपना कुछ उपदेश दिया कि ये जो वेद मन्त्र है, ये हमें तपरस्या के लिए बाध्य करते हैं। **प्रत्येक मानव को तपस्या और याग करना चाहिए।** मेरे प्यारे! जैसे उन्होंने ऐसा कहा, तो उसमें से यज्ञदत्त ब्रह्मचारी उपस्थित हुए। और यज्ञदत्त ने कहा हे प्रभुः! आपने याग का बड़ा वर्णन किया है। हे प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं कि आपने जो याग को कहा याग हम कैसे करें? उन्होंने कहा, क्या याग में साकल्य होना चाहिए। घृत होना चाहिए और देखो उसकी

सर्वत्र सामग्री सुसज्जित होनी चाहिए। और अध्वर्यु हो, उद्गाता हो और वेदसि में यजमान, पुरोहित और ब्रह्मा विद्यमान हो करके याग करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो यह याग कहलाता है। उस याग में चार स्थलियाँ होती हैं। सबसे प्रथम स्थली ब्रह्म, ब्रह्मा की होती है। उसके पश्चात् उद्गाता की होती है। उसके पश्चात् अध्वर्यु की होती है और उसके पश्चात् यजमान, पुरोहित और होतागण होते हैं। मङ्गलम् ब्रव्हे कृणम् देवाः, ये मानो देखो, ये यज्ञशाला, यज्ञ इस प्रकार करना चाहिए। **भावनाओं की मानो देखो विशेषता मानी गयी है।** उस समय याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से ब्रह्मचारी ने कहा, हे प्रभु! यह तो हमने जान लिया परन्तु इसमें महत्त्व क्या है इनका? उन्होंने कहा, उद्गाता उद्गीत गाता है, वेद मन्त्रों का स्वरों में गान गाता है और ब्रह्मा उसका निरीक्षण करने वाला है। और मङ्गले मानो देखो, अध्वर्यु उसका स्वामित्व कहलाता है। और देखो यजमान उसका अधिपति है। इसी प्रकार जब याग का प्रारम्भ होता है तो मानो देखो वेद मन्त्रों की ध्वनि है। अग्नि की धाराएँ हैं। उसके ऊपर मानो देखो, शब्द विद्यमान है। वह जो ध्वनियाँ हो रही हैं वेद मन्त्रों की, वह अन्तरिक्ष में गमन कर जाती हैं। वह द्यौ में प्रवेश कर जाती हैं। मानो देखो वह वायुमण्डल को पवित्र बनाता चला जाता है।

मेरे प्यारे! देखो उस समय ब्रह्मचारी अमृतम् बोले कि महाराज देखो हम यह जानना चाहते हैं, जब ये सुविधा न हों, तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा, तुम याग मानो समिधा ले करके और अग्नि का ध्यान करो। और अग्नि को मानो देखो प्रदीप्त करके तुम उसमें देखो साकल्य न हो, तो तुम उसमें समिधा के द्वारा आहुति हुत कर सकते हो। वह समिधा कह रहा है, प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा। प्राणम् ब्रह्मे कृणम्। मेरे प्यारे! देखो वह हुत कर रहा है, वह आहुति दे रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मणे कृणम्, अग्नि प्रदीप्त हो रही

है और उसके शब्दों को ले करके, वह अग्नि मेरे पुत्रों! द्यौ में प्रवेश कर जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, उस समय ऋषि ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! **तुम्हें याज्ञिक होना है तो अग्नि की धाराओं पर तुम शब्दों को विद्यमान कर दो और वही शब्द द्यौ में प्रवेश कर जाएगा।** और वही शब्द मानो द्यौ के अवृतियों के मध्य में विद्यमान हो करके वही शब्द, जब भी तुम अपने शब्द को विज्ञान के माध्यम से दृष्टिपात करोगे, उसे दृष्टिपात कर लेना। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने जब ऐसा कहा तो बड़ी विचित्रता आयी। ब्रह्मचारी ने उपस्थित हो करके कहा, हे प्रभु! यदि हमने ये माना क्या कहीं हमें समिधा भी प्राप्त न हों, अग्नि भी न हो तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा कि हे ब्रह्मचारी! तुम जल को ले करके हुत करो। मानो जलम् ब्रह्माः कृतम् देवत्वाम्, जल को ले करके तुम, उसमें स्वाहा उद्गीत गाने लगो और वह आत्म ब्रह्मे, सूर्य की किरणों के आश्रित हो करके। मेरे प्यारे! देखो, वह जो हृदय की अग्नि है, **हृदय की अग्नि और सूर्य की कान्ति में बेटा! वो जो शब्द है वो विद्यमान हो करके द्यौ में प्रवेश हो जाता है। क्योंकि ध्वनि का जो स्वामी है वो अन्तरिक्ष कहलाया गया है।** वह अन्तरिक्ष ही मानो उसका देवता है। दिशाएँ उसकी देवता कहलाती हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उसी में शब्द विद्यमान हो करके वह ऊर्ध्वा में गमन कराता रहता है। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा, तुम जल का प्रोक्षण करो और जल के द्वारा तुम हुत करते रहो। वह **हुत का समन्वय मानव की बाह्य अग्नि से और मानव की देखो हृदय रूपी अग्नि से, जब समन्वय हो जाता है तो मुनिवरों! मानव का एक ऊर्ध्वा में जीवन बन करके और प्रभु की आभा को प्राप्त करने लगोगे।** मेरे प्यारे! देखो उस समय, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से ब्रह्मचारियों ने कहा, हे प्रभु! ये भी हमने स्वीकार कर लिया। परन्तु कहीं ऐसा हो कि जल भी हमें पर्याप्त न हो तो हम याग कैसे करेंगे? उन्होंने कहा तुम पृथ्वी के रजों को ले करके और तुम देखो प्राण की आहुति देना प्रारम्भ करो। मानो उसे उद्गीत

गाना प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो वह रजत्वम् ब्रह्माः पृथ्वी यह पृथ्वी ही तो मुनिवरों! देखो वसुन्धरा के रूप में परणित रहती है, यही तो हमें वसु से मिलान करा देती है। मेरे पुत्रों! देखो रजों को ले करके व सङ्कल्पमात्र से अपने विचारों को, हृदय के विचारों को इन्द्रियों का जितना साकल्य है, उसको ले करके मुनिवरों! देखो वह पृथ्वी के रजों को प्रदान कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो यज्ञ के सम्बन्ध में ऋषि-मुनियों ने बड़ा गम्भीर अध्ययन किया है। उन्होंने यह प्रश्न किया, क्या महाराज यदि मानो हमें कहीं पृथ्वी की रज भी प्राप्त न हो और हम पर्वतों की कन्दरा में चले जाए या पर्वत के ऊर्ध्वा शिखर पर चले जाए, हे प्रभु! वहाँ याग कैसे करें? मेरे प्यारे! देखो ऋषि क्या कहता है, वेद का मन्त्र उ्दगीत गाता हुआ, वह वेदज्ञ ऋषि कहता है सम्भवम् ब्रह्मा मनोव्रतम् हृदयानी गच्छतम्वासम् ब्रहे स्वाहा वृति। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है क्या **तुम अपने हृदय में, वह जो हृदयरूपी गुफा है, मानो देखो उसमें तुम्हें याग करना है।** इस बाह्य जगत को तुम हृदय में प्रवेश कर दो। मेरे प्यारे! देखो, तुम **अपने मन से मन, कर्म और विचार, मेरे प्यारे! देखो मन, कर्म और विचार, इन तीनों का साकल्य बना करके हृदयरूपी यज्ञशाला में बेटा! याग करना प्रारम्भ करो।** मेरे प्यारे! देखो हृदय में, जब प्रत्येक साकल्य को ले करके तुम याग प्रारम्भ करोंगे, तो बेटा! तुम्हें परमात्मा की, मोक्ष की जो पगडण्डी है उसे तुम सहज ही प्राप्त कर सकते हो। तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है, क्या हम मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणेः हे ब्रह्मचारियों! देखो याग करना चाहिए।

याग से प्राप्ति

मेरे पुत्रों! जब याग की इस प्रकार उन्होंने विवेचना की तो उन्होंने ये कहा, मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी कवन्धि ने यह कहा, हे भगवन्, हम जानना चाहते हैं, क्या मानो ये जो याग आपने वर्णन किया, इस याग के करने से हमें क्या फल प्राप्त होगा? तो उन्होंने कहा कि इससे अमृताऽम, ये

जो दूषित वायुमण्डल हो जाता है, इस प्रदूषण के लिए मानव को सबसे प्रथम साकल्य, उसके पश्चात् उसका सङ्कल्प और उसका मन, कर्म, विचार जब एक सूत्र में आ जाते हैं तो देखो उसका वायुमण्डल का शुद्धिकरण हो जाता है। हमें शुद्धता प्राप्त होती है। हमें मानो एक आनन्द की प्राप्ति होती है और जहाँ हम संसार के दूषित वायुमण्डल में अपनी दूषित वाणी का उपयोग करते रहते हैं उसको शुद्ध वायुमण्डल में ले जाओ, शुद्ध विचार करने लगो तो मुनिवरों! देखो अशुद्ध परमाणुओं को नष्ट करती हुई, मेरे पुत्रों! देखो एक ऊर्ध्वा में गमन कर जाती है। जैसे मुनिवरों! देखो, एक स्थान है, उस एक स्थान में कलह रहता है तो मुनिवरों! देखो उसका वायुमण्डल कलह में परिवर्तित हो जाता है। और एक स्थान ऐसा है जहाँ दर्शनों की विचारधारा है, देखो वेद मन्त्रों का उद्गीत गाया जा रहा है, प्राण सखा के ऊपर चिन्तन हो रहा है, दार्शनिक तप रहा है बेटा! वो स्थान मानो देखो स्वर्ग की, स्वर्गपुरी कहलाती है। और उन्हीं देखो अशुद्ध विचारों से वह दूसरा स्थान, देखो नार्किक कहलाता है। तो मेरे पुत्रों! इसलिए विचार तुम्हारा संसार में भव्यता को धारण करता हुआ, तुम अपनी हृदयरूपी यज्ञशाला में याग करना प्रारम्भ करो। इससे बेटा! तुम्हारा मानवीयत्व, मोनस्तत्त्व पवित्र बन जाएगा। मेरे प्यारे! इसीलिए माता को ये कहा जाता है, हे माता! तू सत्यवादी बन। सत्यमयी विचारधारा को अपने बाल्य बालिकाओं को जब तू प्रदान कर देती है तो तेरा जीवन सफल हो जाता है और तू याज्ञिक बन जाती है।

इस प्रकार बेटा! ये आज का हमारा विचार क्या कह रहा है। हे वसुन्धरम् ब्रह्माः लोकाम्, बेटा! जहाँ पृथ्वी को वसुन्धरा कहते हैं वहाँ याग को भी वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है। मेरे प्यारे! देखो जहाँ इस याग से मानव का कल्याण होता है और राष्ट्र व समाज का निर्माण होता है। मेरे प्यारे! देखो यजमान के हृदयों में पवित्रता की

तरङ्गें उत्पन्न हो करके बेटा! उनके प्रत्येक वेद के मन्त्रों से, बेटा! ओत-प्रोत होने वाले चित्र मुनिवरों! देखो द्यौ में प्रवेश हो जाते हैं। ये है बेटा! आज का वाक्।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय ये बेटा! देखो आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान, बेटा! भौतिक विज्ञान का समन्वय मुनिवरों! देखो आध्यात्मिकवाद से प्रेरित होना चाहिए और उसी में दोनों एक-दूसरे के पूरक बन जाएँ जिससे मुनिवरों! देखो ज्ञान-विज्ञान अपनी आभा में सदैव गमन करता रहे।

आओ मेरे प्यारे! आज का विचार क्या, क्या वह परमपिता परमात्मा वसुन्धरा के रूप में विद्यमान हैं। हम सदैव उसकी उपासना करते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएँ। ये है बेटा! आज का वाक्। कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा! इससे आगे की चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज के विचारों का अभिप्राय ये कि हम परमपिता की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम संसार सागर से पार हो जाएँ। ये है बेटा! आज के विचारों का मन्तव्य। शेष वार्त्ताएँ कल प्रगट करेंगे। अब वेद मन्त्रों का पठन-पाठन होगा, उसके पश्चात् वार्त्ता समाप्त हो जाएगी।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् वाचन्नमः वायाऽम्।
ओ३म् गन्धर्व प्रावसु आभ्याम् देवाः यम सर्वा आपाऽम्।।

दिनाँक : 24 जनवरी, 1990

।। ओ३म् ।।

गौमेध याग की विवेचना

(गौ-सूक्त)

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वह परमपिता परमात्मा सर्वत्र हैं। संसार की कोई स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वह परमपिता परमात्मा व्याप्त नहीं हैं। क्योंकि जितना भी यह जगत् हमें क्रियाशील में दृष्टिपात आ रहा है यह उस महान् मेरे प्रभु की एक महानता है अथवा एक प्रतिभा है, जिस प्रतिभा के ऊपर प्रत्येक वेद मन्त्र हमें कोई न कोई प्रेरणा देता रहता है। क्योंकि संसार में जितना भी मानव है अथवा दर्शन है वह सर्वत्र कोई न कोई प्रेरणा का एक स्त्रोत माना गया है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से कोई न कोई उड़ान उड़ता रहा है। उड़ान उड़ने वालों में नाना ऋषि हुए हैं जिन्होंने विचित्र से विचित्र उड़ानें उड़ी हैं।

गौ के स्वरूप व याग

परन्तु जैसा आज का हमारा वेद मन्त्र हमें कोई प्रेरणा दे रहा है, वेद मन्त्र कह रहा है ''गौ रसिका अमृताम् देवं भविताः दिव्याः'' आज का हमारा वेद मन्त्र गौमेध सूक्त के ऊपर कुछ विवेचना कर रहा है क्योंकि हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के वेदों में सूत्र आते रहे हैं। जैसे

गौमेध के सूक्तों का पठन-पाठन प्रायः होता रहता है। इससे पूर्व काल में हमने कृष्ण सूक्त, कहीं शिव सूक्त माने गए हैं। इन सूक्तों की विवेचना भी होती रहती है परन्तु आज का हमारा वेद यह जो पठन-पाठन का क्रियाकलाप है वह हमें कुछ प्रेरणा दे रहा है जिस प्रेरणा के ऊपर मानव परम्परागतों से ही अपनी मानवीयता में निहित रहा है। आज का वेद मन्त्र कह रहा था—गौ रसिका। हमारे वैदिक साहित्य में गौ के नाना पर्यायवाची शब्दों की विवेचना होती रहती है, क्योंकि गौ नाम हमारे यहाँ एक पशु को माना है। परन्तु पशु के भी भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गए हैं। जैसे हमारे यहाँ गौ नाम का पशु है, पशु हमारे यहाँ ब्रह्मवर्चोसि जो विद्यालय में ब्रह्मचारी जब प्रवेश करता है तो उसे भी गौ कहा जाता है। पशु के तुल्य कहा जाता है। आचार्य जब गौमेध याग कर लेता है तो वह मेध में ब्रह्मचारी को परणित करता हुआ प्रकाश में लाता है, पशु को वह महान् प्रकाश में लाता है। **पशु का अभिप्राय है जो अज्ञान है, जो प्रकाश में नहीं है।**

हमारे यहाँ गौ नाम जैसे पशु को माना है वह कामधेनु के रूप में भी परणित की जाती है। परन्तु गौ नाम हमारे यहाँ इन्द्रियों को भी माना है। जब बाल्यकाल होता है तो प्रत्येक इन्द्रिय के सम्बन्ध में कोई मानव नहीं जानता। क्योंकि जब इन्द्रियों का समावेश अपने में मानव परणित कर देता है, प्रत्येक इन्द्रिय के विषय में जान लेता है उसके क्रियाकलाप उसमें ज्ञान और विज्ञान है तो वह मानव मेधयाग करता है। गौ रसिका मेधाम् ब्रह्म वाचाः, वह अपने में परणित कर देता है। विचार क्या है क्या प्रत्येक इन्द्रिय पशु के तुल्य होती है जब इन्द्रियों के विषय को हम जान करके उनका साकल्य बना करके, उसका हम याग करते हैं तो वह गौमेध याग के रूप में परणित हो जाता है। तो विचार क्या, गौमेध का वर्णन आता है। हमारे यहाँ गौ नाम पशु को माना है, जिसके गौघृत के द्वारा हमारे ऋषि-मुनि याग में परणित रहे

हैं, यागों का चयन करते रहे हैं। मुझे स्मरण आता रहता है, गौमेध याग के द्वारा, गौघृत के द्वारा मुनिवरो! माता अरुन्धती और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज प्रातःकालीन याग करते थे अथवा अग्न्याधान करते हुए अग्नि का पूजन करते थे। पूजन का अभिप्राय यह है अग्नि के गुणों को अपने में धारण करने के लिए वह उसमें सुगन्धि का आदान करते थे। तो विचार क्या? माता अरुन्धती और वशिष्ठ ही नहीं और भी नाना ऋषिवर जैसे हमारे यहाँ गौमेध याग करने वाले नाना ऋषि हुए हैं, जैसे मुनिवरो! देखो महर्षि पिप्पलाद मुनि के जीवन में आता है। महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज गौमेध याग करते थे। विद्यालयों में गौमेध याग, गौ याग होता है वह मेधों में परणित कराया जाता है। जब ब्रह्मचारी मुनिवरो! आचार्य कुल में प्रवेश करता है तो वह गौ पशु के तुल्य बन करके जाता है। जब वह उसके द्वारा याग करता है आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारी! मैं तुझे मेध में ले जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! गौ नाम अन्धकार का है, मेध नाम प्रकाश का है। वह उसे प्रकाश में परणित कर देता है। जैसे माता अपनी लोरियों का पान करा करके बालक की क्षुधा को शान्त कर देती है। शान्त कर देने से वह माता मुनिवरो! देखो मेधा विडम्ब ब्रह्म वाचो, वह मेध में बाल्य को परणित कर रही है, अब क्षुधा को शान्त करती हुई बालक को अपनी महानता की इस आन्तरिक जगत् की प्रेरणा उसे प्रदान कर रही है।

आओ मेरे पुत्रो! मैं विशाल विवेचना न देता हुआ केवल यह कि गौमेध याग का वर्णन आता रहता है। हमारे यहाँ मुनिवरो! मुझे स्मरण आता रहता है गौघृत के द्वारा माता अरुन्धती, वशिष्ठ मुनि महाराज, ब्रह्मचारीजन एक स्थली पर विद्यमान हो करके याग करते थे। जब घृत के द्वारा याग होता है तो वही घृत परमाणु बन कर के अन्तरिक्ष में परणित हो जाता है। वही मुनिवरो! देखो घृत की जो तरङ्गें हैं वही मानव के आन्तरिक जगत की जो भावनाएँ हैं वह पवित्रतम हैं वह परमाणुवाद

को अन्तरिक्ष में परणित करा देता है। क्योंकि गौ नाम सूर्य की नाना किरणों का नाम भी गौ कहा जाता है वह उसे अपने में धारण करती हुई वह सूर्य की नाना प्रकार की किरणें यहाँ शोधन कर रही हैं अथवा नाना निश्चल प्राणियों को मेघ वह अपनी किरणें प्रदान कर रहा है वह ''मेघाम् ब्रह्मवाचो देवोः सूर्यश्चम् ब्रह्म वाचाः'' मेरे पुत्रो! सूर्य नाना प्रकार की किरणों के द्वारा वह इस संसार को महान् बना रहा है। महानता में परणित करता हुआ वह गौ नाम की जो किरणें हैं उन्हीं को जान करके वैज्ञानिकजनों ने जब उसका जब ध्यान किया तो उसे नाना प्रकार की परमाणुवाद की तरङ्गें बन्द हो करके वह मानव को वैज्ञानिक युग में ले जाती हैं, विज्ञान में परणित कर देती हैं। इसलिए हमारे यहाँ यागों का बड़ा सुन्दर चयन आता रहा है। अश्वमेध यागों का चयन आता रहा है क्योंकि अश्व नाम सूर्य को कहा जाता है। अश्व नाम के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। जैसे अश्व नाम राजा का है, अश्व नाम देखो पशु को, घोड़े को भी हमारे यहाँ अश्वमेध के नाम से परणित किया जाता है।

महाराजा जनक के राष्ट्र में गौमेध याग

जहाँ गौमेध यागों का वर्णन होता है, गौमेध यागों के वर्णन में मुझे स्मरण आता रहता है राजा जनक का जीवन। राजा जनक के यहाँ गौमेध याग होता रहता था। गौमेध याग का अभिप्राय यह है कि जिस राजा के राष्ट्र में देखो गौ नाम पशु का पालन होता है, उसका अग्ना आकृतियों में ध्यान होता है तो वह राजा गौमेध याग करता है। गौमेध याग का अभिप्राय यह है, गौ नाम प्रजा को भी माना है। मेध नाम राजा को माना है जो राजा और प्रजा दोनों एक-दूसरे के सुखद के लिए क्रियाकलाप करते रहते हैं, वह गौमेध यागों में परणित रहते हैं। राजा जनक के यहाँ गौमेध याग होता रहता था, गौ नाम का पशु उसकी पालना होती रहती थी। क्योंकि राजा के राष्ट्र में जितना भी दूध देने

वाला पशु होगा अथवा उसका पालन होगा उसका वरण होगा मुनिवरो! उतना राजा के राष्ट्र में सम्पदा की बलवती होती है, वहाँ लक्ष्मी का वास होता है। तो इसलिए हमारे यहाँ माना गया है कि ''राजा कृति अस्तोः'' **प्रत्येक राजा हमारे यहाँ गौ नाम के पशु की रक्षा करता चला आया है।** रक्षा होनी चाहिए क्योंकि यदि रक्षा नहीं होगी तो पशु का वृत्तियों में पालन भी नहीं होगा। वह दुग्ध भी नहीं होगा। तो राष्ट्र की सम्पदा, समाज की सम्पदा समाप्त हो जाती है।

मुझे पुरातनकाल की वार्त्ताएँ स्मरण आती रहती हैं। हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों के यहाँ आश्रमों में गौ का पालन होता था। राजा के राष्ट्र में गौ का पालन होता रहा है, मुनिवरो! प्रजा में गौ का पालन हो रहा है। तो पालना का अभिप्राय यह है कि इसका सदुपयोग करना है। मुझे स्मरण आता रहता है मुनिवरो! हमारे यहाँ उद्दालक गोत्र के नाना ऋषि हुए हैं जो गौघृत के द्वारा वह याग करते थे, याग करते उन्हीं के द्वारा यन्त्रों का निर्माण करते रहते। यन्त्रों का निर्माण करके उससे परमाणु विद्या को जान करके वह देखो अन्तरिक्ष में जो परमाणुवाद गति कर रहा है अग्न्याधान करने से वह अपने पूर्वजों के जो शब्द अन्तरिक्ष में गति करते हैं उन शब्दों को वह क्रिया में लाने का प्रयास करते रहे हैं। तो मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह विचार-विनिमय दे रहा हूँ कि हमारे यहाँ गौ के कितने पर्यायवाची शब्द हैं।

राजा को देव पूजन की प्रेरणा

राजा जनक की चर्चा चल रही है, राजा जनक के यहाँ प्रत्येक गृह में गौ का पालन हो रहा है। प्रातःकालीन ब्रह्म मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय राजा जनक के यहाँ एक ब्रह्मवेत्ताओं का समूह एकत्रित हुआ जिसमें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, चाक्राणी, गार्गी, महर्षि अर्धभाग, महर्षि दिग्ध, महर्षि सोमभानु, महर्षि अष्टावक्र, स्वाति

ऋषि महाराज, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी यज्ञदत्त, ब्रह्मचारी रोहणीकेतु नाना ऋषि-मुनियों का एक समूह एकत्रित हुआ। परन्तु राजा जनक ने यह कहा कि मेरा राष्ट्र कैसे पवित्र बनेगा? मेरे राष्ट्र में जहाँ ब्रह्म-याग होता रहता है, ब्रह्म की चर्चा होती रहती है, मैं नाना गुरुओं के चरणों की वन्दना करता रहता हूँ, उसके पश्चात् ही मुझे यह चिन्तन बना रहता है कि मेरा राष्ट्र कैसे पवित्र बनेगा? जिससे मेरे राष्ट्र में प्रत्येक प्राणी अपने में स्वतन्त्र हो। अपने उदर की पूर्ति में सदैव तत्पर रहें और राष्ट्र में पवित्रता आ जाए। राजा जनक ने जब ऋषि-मुनियों से यह प्रश्न किया तो ऋषि-मुनियों ने कहा, 'सम्भवे वाचनम् ब्रह्मा वाचाः राजो वृति कृताः' ऋषियों ने कहा, भाई, हे राजन्! तुम्हारा राष्ट्र उस काल में ऊँचा बनेगा, जब प्रत्येक तेरे गृह में, प्रत्येक राष्ट्र के गृह, प्रत्येक मानव के गृह में कोई याग की परम्परा बनेगी। क्योंकि बिना याग की परम्परा के, यह राष्ट्र, समाज इसका नहीं बनता। क्योंकि राजा के राष्ट्र में सुगन्धि चाहती है प्रत्येक मानव सुगन्धि चाहता है, वह आनी चाहिए। जैसे राजा के राष्ट्र में ब्रह्म-याग होता है, **विचारों की सुगन्धि हमारे यहाँ सर्वश्रेष्ठ मानी है।** जब माता अपने पुत्रों को शिष्टाचार में, वाणी में शब्दवादी बना देती है तो मुनिवरो! माता प्रिय याग कर रही है। प्रत्येक पितृगण जब अपने पुत्र को एक महान् शिक्षा दे करके अभ्युदय बना देता है, वह अपने विचारों की सुगन्धि ले करके उसको सदाचार की प्रतिभा में परणित कर देता है, तो प्रिय याग हो रहा है। परन्तु ऋषि-मुनियों ने यह कहा कि प्रभु! यह याग तो हो रहा है, परन्तु एक याग ऐसा होता है जिससे देवता प्रसन्न होते हैं, देवताओं के प्रसन्न होने पर समय-समय पर वृष्टि होती है। समय पर प्रजा अपने में आनन्दयुक्त होती है।

उस समय राजा जनक ने जब यह श्रवण किया तो ऋषियों ने यह कहा, प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। याग उस गृह में होता

है जिस गृह में एक मानव दूसरे का ऋणी न रहे, **ऋण से उऋण होना ही हमें याग में परणित होना है।** हमारे यहाँ ऋण कई प्रकार के होते हैं। एक ऋण वह होता है जो माता अपने पुत्र को जन्म दे करके, उत्पन्न करके यदि उसे सदाचार और शिष्टाचार में परणित नहीं करती है तो **वह माता अपने पुत्र की ऋणी रहती है।** जो पुत्र योग्य बन करके माता की आज्ञा का पालन नहीं कर रहा है, आचार्यों की आज्ञा का पालन नहीं कर रहा है, वह माता-पिता का बाल्य ऋणी रहता है और प्रजा में यदि राजा अपनी प्रजा को आनन्दमयी दृष्टिपात नहीं कर रहा है, प्रजा में दुःखित हो रहा है, प्रजा में क्षुधा से समाज पीड़ित है तो वह राजा प्रजा का ऋणी बना हुआ है और यदि प्रजा अपने राजा के प्रति सहानुभूति, अपनी विचारधारा, सुविचार की आभा नहीं परणित कर रही है तो विचार यह, वह प्रजा राजा की ऋणी रहती है। तो इस प्रकार से एक-दूसरे का ऋणी रहता है।

एक देवता हमारे शरीर में वास करते हैं, देवता हमें देवत्व को प्रदान कर रहे हैं, हमें देवपुञ्ज परणित कर रहे हैं। परन्तु यदि हम देव-पूजन नहीं करते हैं, देवताओं का आदान नहीं कर रहे हैं, आह्वान भी नहीं कर रहे हैं तो हम देवताओं के ऋणी कहलाते हैं। मानव का जो शरीर है यह देवताओं से पिरोया हुआ है, देवता इसमें वास कर रहे हैं, पञ्चमहा जो भूत हैं, जड़ देवता हैं वे इसमें वास कर रहे हैं यदि हम इसमें इसको सुगन्धि नहीं देते हैं तो हम देवताओं के ऋणी बने हुए हैं। राजा जनक के यहाँ प्रातःकालीन मुझे स्मरण आता रहता है जहाँ ब्रह्म-याग होता रहता था। ब्रह्म का चिन्तन होता रहता था। ब्रह्म के चिन्तन में राजा और ऋषि-मुनि उसमें रत्त रहते थे, तो वहाँ प्रातःकालीन राजा जनक और उनकी पत्नी याग करते थे। उनके यहाँ एक यज्ञशाला थी, यज्ञशाला का अभिप्राय यह है कि मानव इसमें अग्न्याधान करके, अग्नि-होत्र करके वह अग्नि का पूजन कर रहे हैं।

क्योंकि अग्नि सब देवताओं का मुख कहलाता है। 'देवता अग्नि अग्निम् ब्रह्म वाचो मुखाः' देवता उसी के साथ, उसी से परमाणु को पान करते हैं, उसी से अपने में सुगठित हो करके वह एक आभा को प्राप्त करते रहते हैं।

विचार-विनिमय क्या? वहाँ प्रातःकालीन देवपूजन हो रहा है, अग्नि को देवताओं का मुख बना करके जो अग्नि में प्रदान करते हैं वह देवता उस हवि को पान करते हैं। वायुमण्डल उससे पवित्र बन जाता है। **जितना वायुमण्डल पवित्र होता है उतना ही देवता प्रसन्न होते हैं।** उसी समय पर वृष्टि होती है, उतना ही समय पर प्रत्येक मानव का क्रियाकलाप होता रहता है। राजा के राष्ट्र में प्रजा आनन्दयुक्त होती है। वैज्ञानिकजन विज्ञान की आभा को प्राप्त करते हैं। साधकजन राजा के राष्ट्र में विद्या का अध्ययन करते हुए राजा के राष्ट्र को पवित्र बनाते हैं।

गौ-घृत याग के अन्तरिक्ष में क्रियाकलाप

विचार-विनिमय क्या? मैं बेटा! अपने विचारों को दूरी न ले जाऊँ, विचार-विनिमय यह कि गौमेध याग होना चाहिए। गौघृत के द्वारा ही अग्निहोत्र होता है, अग्नि का पूजन होता है, परमाणुवाद इसी से वे दूसरे परमाणुओं को निगल जाते हैं। मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ विद्यालय में ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। तो यह यज्ञदत्त, स्वेतकेतु आभा में परणित करने वाले अपनी कृति-आभाओं में रमण करते रहते थे। जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि के यहाँ एक समय ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी यज्ञदत्त, ब्रह्मचारी गार्ग्यपत्य, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु आदि-आदि यह सब ब्रह्मचारी विद्यमान हो गए, तो वेद में एक मन्त्र आया था, तो वेद का मन्त्र यह कह रहा था 'परणम् वृहे वाचन्नमो ब्रह्माः वाचन्ते सम्भामि प्राणन्ते

सम्भामि श्रोतमूमे सम्भामि कृतिभामूऽप्रतों ब्रह्मवाचों देवो विष्णु'। यह वाक्य आ रहा था तो वेद के 'यज्यं भविते वायुर्दुभागं ब्रह्मवाचो अप्रतम् लोकाम् ब्रह्म वाचे कृतिकाः। मेरे पुत्रो! ऐसा मुझे स्मरण है कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ ब्रह्मचारियों की एक सभा में ब्रह्मचारियों का कुछ विचार-विनिमय चल रहा था। तो यह विचार कर रहे थे कि उनके द्वारा नाना यन्त्रालय विद्यमान थे। उन यन्त्रों में यह दृष्टिपात करना चाहते थे कि जो यह गौघृत के द्वारा हम याग करते हैं, दुग्ध के द्वारा जो याग करते हैं, यह परमाणुवाद अन्तरिक्ष में क्या-क्या क्रियाकलाप करता है? मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि ब्रह्मचारी यज्ञदत्त और गार्ग्यपत्य में मुनिवरो! देखो कृतिभानु, कवन्धि के द्वारा अन्वेषण होने लगा।

ऐसा मुझे स्मरण है कि जैसे वह अग्नि में स्वाहा उच्चारण करते तो घृत के द्वारा, दुग्ध के द्वारा जैसे अग्नि प्रचण्ड करके जब समिधा उनसे प्रज्वलित होकर स्वाहा कहते हैं तो वह परमाणुवाद स्वाहा के साथ में जो आकाश बना हुआ था, स्वाहा के साथ में शब्द था, शब्द के साथ में जो चित्र विद्यमान था, वह यन्त्रों में उन्हें दृष्टिपात हुआ। परन्तु जो परमाणुवाद अग्नि में स्वाहा देने से साकल्य के उत्पन्न हुआ था, सूक्ष्म रूप तो वह अन्तरिक्ष में जो अशुद्ध परमाणु हैं शुद्ध परमाणु हैं इनका दोनों का संघर्ष होने लगा। जब संघर्ष होता रहा तो ऐसा मुझे स्मरण है कि वह संघर्ष होता हुआ उसमें ऐसा परिवर्तन हुआ कि अशुद्ध परमाणुओं को निगलता हुआ शुद्ध वायुमण्डल में शुद्ध वायु प्रदान करता हुआ वह परमाणु अपनी आकृति में लय हो गया। तो परिणाम क्या याज्ञवल्क्य मुनि के विद्यलाय में इस प्रकार के अन्वेषण ब्रह्मचारीजन करते रहते थे। जब ब्रह्मचारियों ने इस प्रकार का अन्वेषण किया इस प्रकार से उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि वास्तव में हमें गौघृत के द्वारा याग करना चाहिए। परमाणुवाद इस विज्ञान के युग में यदि

वायुमण्डल अुशद्ध हो गया है तो खनिज के द्वार से खनिज को हम अग्नि में सूक्ष्म बना लेते हैं, तो उससे वायुमण्डल अशुद्ध बनता है। परन्तु गौघृत में, दुग्ध में उसमें ऐसी विशेषता मानी जाती है, उसका याग करने से समिधाएँ विशेष एकत्रित करके जब उनके द्वारा याग करते हैं तो यन्त्रों में ऐसा हमें दृष्टिपात हुआ।

विचार-विनिमय क्या? राजा जनक के यहाँ इस प्रकार के यन्त्र विद्यमान रहते थे। हमारे यहाँ इसलिए विष्णु याग, रुद्रयाग नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहा है। हमारे यहाँ अश्वमेध, गौमेध, वृत्तिका, सम्भूतिवास्त याग, अग्निष्टोम याग नाना प्रकार के यागों का चयन परम्परागतों से ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में वैदिक साहित्य में हमें प्राप्त होता रहता है।

आज मैं तुम्हें विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार क्या है? गौमेध याग का वर्णन चल रहा है। राजा जनक के यहाँ विशेषकर गौ का पूजन होता था। गौ के पूजन का अभिप्राय यह है कि गौ का पूजन, पशु का पूजन होना चाहिए। राजा के राष्ट्र में इसका पूजन होना ही एक महानता कही जाती है। हमारे यहाँ ऋषि-मुनि अपने में पूजन करते रहे हैं। मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय जब महर्षि सोमभानु के द्वारा नाना ब्रह्मचारी जिज्ञासु ब्रह्मवेत्ता उनके आश्रम में पहुँचे तो वह गऊओं का पालन कराते रहते थे। तो यहाँ विशाल प्रकरण में आता है कि गौ नाम यहाँ इन्द्रियों का आता है जहाँ गौ का प्रकरण आए वहाँ गौ का वर्णन आए तो इन्द्रियों का वाचक कहलाता है। जब राजा के राष्ट्र में गौमेध का वर्णन आता है तो नाम पशु का आता है। जहाँ विद्यालय में गौ का शब्द आता है तो मुनिवरो! वहाँ विद्यालय में ब्रह्मचारी को गौ कहते हैं। नाना जहाँ कृषक के द्वारा गौ का वर्णन आता है तो वहाँ पृथ्वी को गौ कहा जाता है।

महर्षि पिप्पलाद आश्रम में गौमेध याग

विचार-विनिमय क्या? गौमेध याग का बड़ा विशाल वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है। हमारे वेद का पठन-पाठन हमें गौ के लिए वर्णन कर रहा है। गौमेध याग के लिए हमें बाध्य कर रहा है, तो मुनिवरो! देखो हमें गौमेध याग करना चाहिए। एक समय महर्षि पिप्पलाद मुनि के यहाँ जब कृतवाभानु ऋषि उनके आश्रम में पहुँचे और भी नाना जिज्ञासु पहुँचे तो उन्होंने कहा कि प्रभु! हम ब्रह्मज्ञान पाने के लिए आए हैं। हमारी इच्छा यह है कि हम ऋत् और सत् को जानना चाहते हैं कि ऋत् क्या है और सत् क्या है? तो महर्षि पिप्पलाद ने यह कहा कि महाराज हमारे यहाँ एक नियम बना हुआ है कि जो भी ब्रह्मचारी आता है, जिज्ञासु आता है वह ब्रह्मचर्य का ब्रह्मवर्चोसि ब्रह्मव्रतों का पालन करने वाला हो और गऊओं की सेवा करने वाला हो। आचार्य की वार्त्ता को उन्होंने स्वीकार किया और कहा कि प्रभु! धन्य है हम गौमेध याग का, गौ की सेवा करेंगे। तो यहाँ गौ का वर्णन आता है। जब ब्रह्मचर्य के व्रत से ब्रह्मवर्चोसि का पालन करता हुआ, ब्रह्मचर्य का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक श्वास की गति के द्वारा अपने साँस को ब्रह्मसूत्र में पिरो देने का नाम ब्रह्मचर्य की चरि में रमण करना है। जहाँ गौमेध का वर्णन आता है कि हमें गौ की सेवा करनी है। तो आत्मवेत्ता बनने के लिए गौ इन्द्रियों का पालन करना है। गौ हमारे यहाँ पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ यह गौ कही जाती हैं। यह गौ के रूप में परणित मानी गई हैं। जैसे हमारे नेत्र हैं, हमारी त्वचा है, वाणी है, इसी प्रकार कृतियों में श्रोत्र हैं और घ्राण हैं। प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को हमें साकल्य बना करके हृदयरूपी जो गुफा है, हृदयरूपी जो ज्ञान ब्रह्म वाचोः ज्ञानरूपी अग्नि को चयन करते हुए इसमें इन्द्रियों के विषयों की आहुति देनी चाहिए। जब वह आहुति देता है तो गौ की रक्षा हो जाती है, गौ का पालन हो जाता है। तो मुनिवरो! हमारे नेत्र हैं इन्हें सु-दृष्टि पान करना है, सु-दृष्टि ही दृष्टिपान करना है। मुझे स्मरण आता रहता है मेरे एक महापिता थे।

एक समय पचासी (85) वर्ष तक उन्होंने यह पालन किया कि मैं सदैव नेत्रों से सुदृष्टि पान करूँगा। सुदृष्टि पान करने वाला नेत्रों से जो भी निहारता है नेत्र जहाँ जाते हैं वहीं सत्य का पालन करते चले जाते हैं। विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! देखो सत्यमयी अपनी आभा को सुदृष्टि में ले जाना हमें इन्द्रियों का पालन करना है। प्रत्येक मानव जो अपनी इन्द्रियों का पालन करता है, इन्द्रियों को गौ कहा जाता है, त्वचा से सदैव प्रीति ही प्रीति करते रहो, स्नेह ही करते रहो तो मानव समाज में पूज्य बन जाता है, वह देवता बन जाता है।

मुझे स्मरण है एक समय देखो महर्षि उद्दालक गोत्र में एक ऋषि हुए हैं जिनका नाम कमेनकेतु था। तो कमेनकेतु एक समय सत् का पालन करने लगे। सत् का पालन करते उन्हें नवासी (89) वर्ष हो गए सत् का पालन करते हुए। सत्य का उच्चारण करते थे सत्य में ही रहते थे, वह सत्य ही चिन्तन करते थे, सत्य का ही मनन करते थे। वह सत्य में ही रत्त रहते हुए जो उच्चारण करते थे वह सत्य होता। तो इन्द्रियों के ऊपर अनुसन्धान करना, उसका पालन करना यह मानवीय दर्शनों की दृष्टि से सत्य को पान करना है। परमात्मा की प्रतिभा को प्राप्त करना है। श्रोतों से सदैव सत्य शब्दों को श्रवण करते रहो, सत् ही उच्चारण करते रहो प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को अपने में एकत्रित करना मोक्ष के द्वार के लिए हमें गति करना है। यदि इन्द्रियों के ऊपर हम अनुसन्धान, अन्वेषण नहीं करेंगे तो मोक्ष हमें प्राप्त नहीं होगा, क्योंकि प्रत्येक इन्द्रिय के लिए परमात्मा, ज्ञान रूपी अग्नि में उसका साकल्य बना करके हमें आहुति देना है। आहुति जब देते हैं तो स्वाहा कहते ही हमारा जीवन एक महान् बन जाता है।

मुझे स्मरण आता रहता है स्वाक्षाम् ब्रह्म वाचो देवाः हमारी जो रसिका है यह स्वादों का पालन करती है। जब यह स्वाद को अपने में धारण करती है नाना प्रकार के रसों को अपने में धारण करती है,

अपने रसों में रसोरसी बन करके चन्द्रमा को प्राप्त हो जाती है। यह चन्द्रमा को प्राप्त हो करके अपने में अद्भुत बन जाती है। तो विचार-विनिमय क्या? हमें भी गौ रूपी इन्द्रियों का पालन करना है। तो महर्षि पिप्पलाद मुनि के यहाँ नाना ऋषिवर गौ का पालन कर रहे हैं। जब उन्हें लगभग एक वर्ष हो गया ब्रह्मचर्य के व्रत को लेते हुए, इन्द्रियों का पालन करते हुए, एक वर्ष के पश्चात् वह जिज्ञासु महर्षि पिप्पलाद मुनि के चरणों में ओत-प्रोत हो गए। और यह कहा कि प्रभु अब हमें ब्रह्म का उपदेश दें, हम ऋत् और सत् को जानना चाहते हैं? तो ऋत् और सत् के ऊपर ऋषि ने प्रश्न किया, तो महर्षि पिप्पलाद ने यह सूक्ष्म सा उत्तर दिया। एक वर्ष का तप किया, चिन्तन और मनन किया परन्तु ऋषि गागर में सागर की कल्पना करते थे। ऋषि-मुनियों का जीवन बड़ा विचित्र रहता है। उन्होंने एक ही बात कही कि **ऋत नाम प्रकृति का है सत् नाम ब्रह्म का है** दोनों के सन्निधान से इस संसार की रचना होती है। जब संसार की रचना होती है तो यह ब्रह्माण्ड नाना रूपों में दृष्टिपात आने लगता है। तो ऋत् नाम प्रकृति का है सत् नाम ब्रह्म का है, दोनों को जानना इदम् ब्रह्म वाचो देव बृहे वृताम् देवाः ऋत् और सत्य के ऊपर विवेचना करते हुए ऋषि ने यही कहा है कि जितना भी यह परमाणुवाद है, जितना भी हमारी गौ नाम की इन्द्रियों का तुमने एक वर्ष तक पालन किया है, इसमें जो भी समाहित हो रहा है यह सब प्रकृतिवाद है और इन्द्रियों से जो परे विषय बनता है वह ब्रह्म का विषय है। ब्रह्म में परणित होने का नाम मोक्ष की प्रतिभा को प्राप्त करना है। तो मेरे पुत्रो! यह वाक्य उच्चारण करके महर्षि पिप्पलाद भी मौन हो गए और ब्रह्मचारीजन, जिज्ञासुजन प्रत्येक साँस की प्रतिभा को ब्रह्मसूत्र में पिरोकर वह अपनी प्रतिभा को प्राप्त होकर के गौमेध याग में परणित हो गए। तो विचार-विनिमय क्या? प्रत्येक राजा के यहाँ समाज में प्रत्येक महर्षियों के यहाँ ब्रह्मबृहे गौमेध याग होता रहा है।

महर्षि वशिष्ठ मुनि और माता अरुन्धती का याग

मैं महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज का वर्णन कर रहा हूँ। माता अरुन्धती और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज, जब वह ब्रह्म की उड़ान उड़ते रहते हैं, ब्रह्म का चिन्तन होता रहता है। ब्रह्म की प्रतिभा में वह रमण करते रहते हैं तो गौमेध याग होता है। गौमेध प्रातःकालीन ब्रह्मचारीजन एकत्रित होते। प्रत्येक इन्द्रियों के हितों की चर्चाएँ होतीं। उसके पश्चात् गौमेध, अग्निहोत्र गौघृत के द्वारा, परमाणुवाद से वाणी की सत्यता के द्वारा वह वायुमण्डल को पवित्र बनाया जाता है। उस वायुमण्डल के पवित्र होने पर मानव साधना में पवित्रतम को प्राप्त होता है। तो महर्षि वशिष्ठ के यहाँ नाना कामधेनु गऊ थीं। जिनकी चर्चाएँ पूर्व की हैं। शेष चर्चाएँ तो कल ही प्रगट करूँगा। आज का वाक्य हमारा क्या कह रहा है। बेटा! हमें गौमेध याग करना है, क्योंकि **गौ नाम प्रकृति को भी कहा जाता है,** गौ नाम पशु वृत्तियों को भी कहा जाता है। **अज्ञान को प्रकाश में लाने का नाम भी बेटा! गौमेध याग करना है।**

आज का विचार यह है कि हम गौमेध याग करने वाले बनें। हम गौ को विचारने वाले बनें क्योंकि गौ हमारे यहाँ हमारा जीवन का अङ्ग बनी हुई है। हम परम्परागतों से यह विचारते हैं कि गौ का हमारे जीवन से क्या सम्बन्ध है? तो विचार आता है गौ हमारे शरीर का अङ्ग बनी हुई है, धर्म का एक अङ्ग बनी हुई है क्योंकि राष्ट्रीयता का एक प्रतिभाषित बनी हुई है। इससे प्रत्येक राजा और प्रजा में गौमेध, गौ की रक्षा होती चली जा रही है। जिसके ऊपर हमारे यहाँ परम्परागतों से ही विचार-विनिमय होता रहा है। मुझे स्मरण आता रहता है राजा जनक के यहाँ भी चर्चा चल रही थी। राजा जनक के यहाँ गौ का पालन होना, ब्रह्म-याग होना, ब्रह्म चिन्तन होना, प्रत्येक गृह में याग होना, प्रत्येक राजा के राष्ट्र में शुभ चिन्तनीय एक विषय कहा जाता है।

याग की अवहेलना का परिणाम

जो राजा याग की अवहेलना करता है, सुगन्धि की अवहेलना करता है, गौ की अवहेलना करता है, उस राजा का राष्ट्र आज नहीं तो कल रक्तभरी क्रान्ति का अवशेष बन करके रहता है। मुझे बहुत पुरातनकाल में बहुत से काल को दृष्टिपात करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। एक समय द्वापर आवृत्ति का मध्यकालीन कुछ महाराजा शान्तनु से पूर्व एक राजा हुए जिनका नाम स्वामी कृतिभानु राजा था। स्वामी कृतिभानु राजा ने देखो गौ पशु की अवहेलना की है। जब गौ पशु की अवहेलना की तो विद्यालयों की अवहेलना हो गई। अवहेलना हो जाने का परिणाम यह हुआ कि मुनिवरो! देखो उसमें रक्तभरी क्रान्ति आ गई। मुझे स्मरण है उस रक्तभरी क्रान्ति का यह परिणाम हुआ कि वह राष्ट्र समाप्त हो गया। जब राष्ट्र समाप्त हो गया तो उसके पश्चात् उनके वंश में एक श्रेष्ठकेतु नामक राजा रह गए परन्तु वह राष्ट्र का पालन करने लगे और उन्होंने गऊओं की सेवा की। एक गौ को ले करक वह महर्षि स्वाति ऋषि के द्वार पर पहुँचे। गऊओं को ले करके उन्होंने कुछ सौ गऊ ले करके वे जब पालन करने लगे भयङ्कर वनों में वह याग करते थे। वह गऊ जब दस हजार गऊ हो गईं, उसके पश्चात् वह अपने राष्ट्र को आ पहुँचे। आ करके उन्होंने राष्ट्र की स्थापना की। ऐसा कहीं हमें साहित्य में प्राप्त होता है।

आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज का विचार-विनिमय यह बेटा! मैंने आज तुम्हें बिखरे हुए पुष्पों को एक माला में लाने का प्रयत्न किया है। **आज का विचार क्या है?** गऊओं का पालन करना चाहिए, गऊओं की रक्षा करनी चाहिए, गौघृत के द्वारा याग करना चाहिए, जिससे मुनिवरो! मानवीयता पवित्र बन करके हम गौ नाम इन्द्रियों को लेते हैं, पशु को लेते हैं हमें इनका पालन करना है। यह है आज का वाक्। अब हमें समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएँ कल प्रकट

करूँगा। आज मेरा वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि नाना राजाओं की कुछ चर्चाएँ की हैं, कुछ ऋषियों की चर्चाएँ कीं। बिखरे हुए पुष्पों को एक माला, एक धागे में पिरोन का प्रयास किया, सूत्र में लाने का प्रयास किया है। शेष चर्चाएँ गौमेध याग के सम्बन्ध में कल प्रगट करेंगे। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

वेद पाठ .....

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्! आज्ञा।
पूज्यपाद गुरुदेव–ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

दिनाँक : 7 जनवरी, 1984
समय : रात्रि 7:00 बजे
स्थान : गाँधी सरोवर पटना

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) **PAN No. – AAAAV7866J**
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900
website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. आत्मा परमात्मा का सम्बन्ध एक महान् है।
2. जब यह आत्मा उस परमपिता परमात्मा का अन्तःकरण से गुणगान गाती है तो वास्तव में मग्नता उत्पन्न होती है।
3. परमात्मा को माता-पिता दोनों के नाम से पुकारा जाता है।
4. परमात्मा दुर्गेवेति है जो हमारे दुगुर्णो को शान्त करने वाला है।
5. हमें उस परमपिता परमात्मा की याचना करनी चाहिए जिससे हमारा हृदय पवित्र हो जाए, हमारी मनोवांछित कामनाएँ परमात्मा के निकट पहुँचे।
6. परमात्मा हमें वही अमृत प्रदान करते हैं जो हम चाहते हैं जिसे हम अपने मानवत्व में धारण करना चाहते हैं।
7. परमात्मा मानव के अन्तःकरण की भावनाओं का आहार करता है और उसी के अनुकूल फल देता है।
8. जो भी कार्य हो वह हृदय से हो, पवित्रता से हो, पवित्र विचारों से हो।
9. सम्पन्न विद्याओं का एक ही लक्ष्य है कि मानव को अपना जीवन ऊँचा बनाना चाहिए।
10. सबका लक्ष्य होना चाहिए कि मानवता को जानो।
11. यह संसार स्वर्ग जब बनता है। जब विचारों पर आक्रमण नहीं किया जाता।
12. विषैले प्राणी भी हें जैसे सर्प इत्यादि योनियाँ हैं जो दुर्गन्ध को शोषण करते रहते हैं और मानव को सुगन्ध प्रदान करते हैं।
13. जो भी परमात्मा ने उत्पन्न किया है वह मानव के लिए।
14. ज्ञान से ही मानव का भविष्य बनता है।
15. राष्ट्र उसे कहते हैं जहाँ प्राणी मात्र की रक्षा की जाती है।
16. यह परमात्मा की सम्पन्न सृष्टि प्राणी मात्र के लिए है।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

रक्षित भारद्वाज

श्रीमति इन्दु भारद्वाज व श्री विपिन भारद्वाज निवासी ग्राम रई, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश ने अपने प्रिय सुपुत्र रक्षित भारद्वाज के इक्कीसवें जन्मदिवस, दिनाँक 7 जून, 2019 के शुभ आगमन पर प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 1100 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उदारता से प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार व्यक्त करती है।

श्री भारद्वाज जी गुड़गाँव में सेवारत हैं और वहीं पर अपने परिवार सहित अपने जीवन को अपने कार्य के साथ-साथ वैदिक परम्परा से सम्पन्न करने में प्रयत्नशील हैं। समस्त परिवार पूज्यपाद गुरुदेव से विशेष प्रभावित है और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए यागों में अपनी आहुति प्रदान करके अपने जीवन को निरन्तर यज्ञमयी बनाने में सदैव अग्रणीय रहता है।

ऐसे श्रद्धालु एवम् याज्ञिक परिवार के सहयोग का समिति पुनः से आभार प्रकट करती है और उनके सौभाग्यशाली पुत्र के जन्मदिवस पर बारम्बार शुभकामनाएँ देते हुए समस्त परिवार के लिए सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	30.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	45.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, ए-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली – स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर उर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए यज्ञशाला में परणित होते हुए अपने विचारों का यज्ञ करते चले जाएँ। नाना प्रकार का संकल्प के साथ में हमारा एक मानसिक संकल्प हो, प्राण का ही उसमें निदान हो, उसके पश्चात् जब हम उसमें आहुति देते हैं तो वह आहुति द्यौ लोक को प्राप्त होती है। देवतागण उसको प्राप्त करते हैं और देवता जब तृप्त होते हैं तो राष्ट्रवाद को क्या, समाज को पवित्र बनाते चले जाते हैं। परमाणुवाद को ऊँचा बनाते चले जाते हैं। क्योंकि यह जितना जगत है यह सब परमाणुओं की ही रचना है। द्यौ लोक का जो घृत है उसमें कितने सूक्ष्म परमाणु होते हैं, और वह परमाणु जब अग्नि-उद्‌गाता बन करके और वायु अध्वर्यु बन करके जब उसका साकल्य उसमें प्रदान किया जाता है तो द्यौ लोक में कितनी महान गति होती है, कितना मानव का हृदय स्वच्छ और पवित्र होता है, ममता से रहित होता है, नाना प्रकार की विडम्बनाओं से रहित होता है उतना ही द्यौ लोक को मानव का संकलन प्राप्त होता चला जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 47 : अंक : 562
जुलाई 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-07-2019
Published on 5th day of the same month